ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

ज्ञान सिंह मान कृत उपन्यास 'दीमक और दायरे' में ऋणग्रस्तता की समस्या

डॉ. प्रवीण कुमार पी. एच. डी. हिन्दी, एम.ए.हिन्दी, बी.एड. गांव कंवरपुरा, जिला सिरसा–125055 हरियाणा।

किसी मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य से उधार लिए गए पैसे लेता है और उसके बदले ब्याज भी देता है तो उसे ऋणग्रस्तता कहा जाता है। ज्यादातर ब्याज महाजनों द्वारा लिया जाता है। कभी–कभार ऋण लेने वाले व्यक्ति को अपनी कोई वस्तु गिरवी रखनी पड़ती है।

आचार्य कौटिल्य ने अपने 'कौटिल्यशास्त्र' में अर्थ की परिभाषा देते हुए लिखा है– ''मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं। आचार्य कौटिल्य ने दो प्रकार से अर्थ की परिभाषा मानी है। 1. जीविका 2. भूमि। जीविका और भूमि का संबंध मनुष्य से जोड़ा गया है, क्योंकि अर्थ और भूमि का लाभ मनुष्य के उपयोग और उपभोग के लिए ही होता है।

'अर्थ' वह मुद्रा है जिसके द्वारा मानव अपनी दैनिक सुविधाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। परिश्रम के द्वारा मानव जो पारिश्रमिक मिलता है वह 'अर्थ' है।

संसार में मनुष्य अपने भोजनाच्छादन और जगत के समस्त व्यवहार को कैसे चलाता है। स्पष्टतः आजीविका और व्यवहार बिना 'अर्थ' के चल ही नहीं सकते। दोबारा अर्थ कैसे प्राप्त होगा? इस हेतु कौटिल्य ने भूमि (कृषि) को ही प्रथम स्थान दिया है। क्या भूमि कहने मात्र या भूमि के रखने मात्र से ही 'अर्थ' की प्राप्ति, जीविका की समस्या हल और व्यवहार का संपादन हो जाएगा? कभी नहीं? कौटिल्य ने सहयोग को जीविका और व्यवहार चलाने में आवश्यक माना है एवं अर्थ की प्राप्ति के बिना सहयोग के हो ही नहीं सकती। कौटिल्य ने दूसरे श्लोक का अर्थ बताते हुए वर्णन किया है कि मनुष्यों वाली भूमि को ही मनुष्य अपने पुरुषार्थ से उस भूमि से अपनी आजीविका और जगत के व्यवहार को चलाने के लिए संगठित होकर उत्पादन को बढ़ाएंगे। मनुष्यों और भूमि की जीवन रक्षा के लिए जो वस्तु प्राप्त हुई है उसी को 'अर्थ' कहा गया है। अर्थ को जीवन चलाने के लिए व जगत के व्यवहार चलाने हेतु अति आवश्यक माना है। अर्थ के बिना जीविकोपार्जन चलाना संभव नहीं है।

ऋणग्रस्तता का चित्रण डॉ. ज्ञान सिंह मान ने अपने उपन्यासों में किया है। 'दीमक और दायरे' उपन्यास में बाल सिंह अपनी गरीबी के कारण कुंवर साहब से सूद पर पैसे लेने जाता है–

''हां सरकार, उसकी मां को बचाने के लिए मैंने साहूकार से तीन हजार रूपये कर्ज लिए थे। शहर का बड़ा डॉक्टर कहता था कि पेट में गोला है, बड़ा ऑपरेशन करना होगा, हम गरीब लोग इतना बोझ कैसे उठा सकते हैं–''

कहते–कहते बाल सिंह का चेहरा विषण्ण हो गया। वाणी तरल हो आई, उसने सांस लेकर कहा, '' उसे बचाने के लिए मैंने तीन हजार दांव पर लगा दिए–हार गया–मैं हार गया, कुंवर साहब– ''वृद्ध बाल सिंह भावुक हो उठा। वर्षों से विस्मृत विषाद पत्नी का स्मरण पर उस के शरीर में सिहरन उत्पन्न कर गया–''वह मर गई और मैं कर्ज के बोझ में दब गया। सूद की रकम तक देने को मेरे पास पैसा नहीं रहा। हमारी नई सरकार बनते ही रियासत की नौकरी भी जाती रही। अब तो, अब तो, ''बाल सिंह कह न सका, अपने मन को वह इतनी सुगमता से तो व्यक्त नहीं कर सकता था। दीर्घ श्वास लेकर उसने फिर से अपना काम आरंभ कर दिया। हरपाल ने कुछ सोच कर धीमे स्वर में कहा, ''कितना रूपया होगा? मेरा मतलब सूद आदि की रकम मिला कर कितना तुम्हारे सिर पर है–''

''कुवंर साहब–'', उस भोले ग्रामीण ने आह भर कर कहा,
''जब मैं उसे चुका ही नहीं सकता तो फिर गिनती क्यों करूं– हां साहूकार तकाजे के समय कह देता है– पांच हजार हो गए हैं, पांच हजार– ।''

सूदखोर अनपढ़ व भोले–भाले लोगों से तीन का छह रूपया वसूल करते हैं।
कई बार तो सूदखोरों की नजर उनकी बहू–बेटियों पर भी होती है, वे उनकी इज्जत का सौदा करना चाहते हैं। इसका एक उदाहरण 'दीमक और दायरे' उपन्यास में माधवी कुंवर साहब को बताती है–

''कुंवर साहब, धनी लोगों के पास क्या आत्मीयता नाम का कोई भाव नहीं होता? क्यों उनकी दृष्टि बाह्य रूप तक ही सीमित रहती है। अभी–अभी एक साहूकार आया था, वह अपने धन के बल पर मेरे शरीर और बाबा की इज्जत का सौदा करना चाहता था– और आप।'' माधवी के लिए कहना कठिन हो गया। उसकी सांस फूल रही थी, वह लंबी हिचकी भर कर बोली,
''आप मेरी आत्मा को खरीदना चाहते हैं, क्यों?''

और माधवी ने अपना मस्तक चारपाई पर पटक दिया। वह अपने व्यवहार पर लज्जा का अनुभव करने लगा परंतु माधवी के इस प्रकार आंसुओं को भी तो वह नहीं देख सकता था। उसने साहस बटोर कर अपना अस्थिर सा हाथ माधवी के मस्तक पर रख दिया। एक आत्मीय स्पर्श! कुछ सोचता हुआ बोला।''

कई बार लोग अपनी पारिवारिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी जमीन तक गिरवी रख देते हैं। 'सूख रेत के घरोंदे' उपन्यास में अभी अपनी जमीन गिरवी रखकर अपनी पढ़ाई जारी रख पाता है–

''इतना ही जानता हूं– सामान्य परिवार से था– जमीन गिरवी रखकर पढ़ाई जारी कर पाया था– विदेश गमन के लिए रा ट्रीय टीम का चयन होना था– नाम सबसे ऊपर था– किसी 'मनिस्टर' के संबंधी के लिए उसे 'ड्रॉप' कर दिया गया। हताश था– गिरवी जमीन छुड़ाने के प्रयास करता रहा– जिनके पास जमीन बंधक थी, राजनीति में अधिक मजबूत हो गए– गांव में एक हत्या हो गई। दोष डी.डी. के भाई पर लगा। अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुरूप स्थिति को संभालने का प्रयास करता रहा– सरकार बदली, आतंक का दौर बढ़ने लगा– युवाओं को चुन–चुनकर झूठे 'एनकाउंटर' के नाम पर मृत्यु के घाट उतारा जाने लगा– इसी प्रवाह में डी. डी. के भाई और बहन को भी।''

जब आदमी का काम अच्छा नहीं चल रहा होता तो ऋण मांगने वाले भी बहुत परेशान करते हैं। 'दीमक और दायरे' उपन्यास में हरपाल की फैक्ट्री में आग लगने से उसका सब कुछ सवाह हो जाता है और उसके पास कुछ नहीं बचता तब लेनदार भी उसे तंग करने लग जाते हैं–

''हरपाल की फैक्ट्री पूरी तरह जल चुकी थी। समय पर सहायता मिलने पर भी वह लकड़ी और बांस से भरे गोदामों की रक्षा न कर सका। उसके सब खिलौने आग की आह में तड़प कर रह गए। गरम राख के समीप अपने उजड़े परिश्रम को देखकर हरपाल की आंखें तरल हो आई। उसने किस भव्य आशा से प्रेरित होकर उस भूमि के टुकड़े पर अपने स्वप्नों का भवन खड़ा किया था। किस उत्साह से उसने अपनी मां के गर्व को चूर करने की भीष्म प्रतिज्ञा की थी। परंतु विधि के एक ही श्वास ने उसके स्वर्ण अक्षरों को प्रछन्न बना दिया। फैक्ट्री के नष्ट होते ही ऋण लेने वालें ने घर के द्वार पीटने आरंभ कर दिए। फैक्ट्री को आग कैसे लगी, इसका पता तो पुलिस के कर्मचारी भी न लगा सके। अपने परिश्रम का भाग्य द्वारा ऐसा तिरस्कार देखकर उसका दिल टूट गया। ऐसे ही संकट काल की आशंका में उसने फैक्ट्री का बीमा करवा रखा था। बीमा कंपनी से कुल मिलाकर जो उसे प्राप्त हुआ उससे वह तकाजा करने वालों के मुंह बंद नहीं कर सकता था। परिणामस्वरूप उसे परिस्थिति के आगे शस्त्र डालने पड़े। अपनी पूरी शक्ति और पहुंच जुटाकर भी वह तीन लाख का ऋण नहीं उतार सकता था।''
डॉ. मान द्वारा रचित उपन्यास 'दीमक और दायरे' उपन्यास में इसी विद्रुपता का चित्रण किया गया है–

''कुछ क्षणों तक वह बाल सिंह और माधवी के दुःखी जीवन के बारे में सोचता रहा। सहसा द्वार पर आवाज हुई, उसने घूम कर देखा। भूमि की ओर मस्तक झुकाए माधवी उसके समीप थी। इस समय हरपाल से आंख मिलाकर बात करने का साहस उसमें नहीं रहा था। बेचारी अपनी निर्धनता के बोझ से दबी जा रही थी। एक तो रूप का भार और दूसरे आत्म–गौरव की रक्षा का प्रश्न–हरपाल ने उसके स्निग्ध पलकों को तरल कपोल प्रदेश से अनुमान लगा लिया कि वह आंसू बहाकर आ रही है। उसकी गति में पहले सा विश्वास और स्थिरता नहीं थी, परंतु ऐसे दिन तो माधवी के जीवन का अंग बन चुके थे। अपने अतिथि के सामने तो वह अपनी निर्धनता का नाटक नही खेल सकती थी। परिस्थिति को संभालने के प्रयास में उसने कह ही दिया, ''ओह, मैं तो भूल ही गई। आपके लिए अभी दूध गर्म करना है।''

प्रस्तुत उपन्यास में माधवी कंवर साहब से कहती है कि वह उनकी निर्धनता का उपहास न उड़ाए–

उसे ऐसा लगा कि लंपट व्यक्ति ने उसके वक्ष पर पड़ा महीन वस्त्र चिथड़े–चिथड़े करके उड़ा दिया है। अपनी लुटती लाज को बचाने के लिए जैसे कोई अबला चीत्कार कर उठती है, वैसे ही मर्म–भेदी स्वर में माधवी चीख उठी, ''भगवान के लिए हमारी निर्धनता का इस प्रकार उपहास मत उड़ाइए– घर आया अतिथि तो परमेश्वर होता है। अतिथि के लिए तो हम अपने प्राण तक न्योछावर कर देते हैं फिर आप, ''माधवी का स्वर अस्थिर हो गया उसका शरीर शुष्क पत्ते की भांति कांप सा गया। भाव विह्वल होकर वह हरपाल के पैरों में गिर पड़ी, भर्राए कंठ से बोली, ''कुंवर साहब, आप बड़े आदमी हैं। ये नोट आपके लिए चंद सिक्कों सा महत्व रखते हैं। परंतु हम गरीबों के पास अहं और आत्म–सम्मान ही तो है जो हमारी पूंजी कहलाते हैं, आप इन्हें भी लूट लेना चाहते हैं, परंतु क्यों?''

डॉ. मान ने अपने उपन्यास 'सिमटता सागर' में इंदिरा गांधी द्वारा दिए गए नारे 'गरीबी हटाओ' की सार्थकता का चित्रण मि. मुंझाल के माध्यम से किया है–

'मुंझाल साहब, कुछ भी हो, आपकी अपरोच निगेटिव है।''
''तो इंदिरा जी की 'गरीबी हटाओ' क्या है? गांधी जी का अहिंसावाद क्या है? 'निगेटिव' और पॉजीटिव' क्या दृष्टिकोण का ही भेद नहीं है? जो सम है क्या दूसरे पहलू से वि ाम नहीं हो जाता..... ।''
''लेकिन गरीबी हटाओ के पीछे उदात भावना है।''
''वाह रे पीर!''
मुंझाल साहब उधार खाए बैठे थे।''

'अजय बाबू, आपके होते, हम गरीबों की मजूरी मारी जाए। यह तो पाप होगा। इधर मैंने दो महीने सेठ जी के घर बर्तन धोए, खाना बनाया। आज मुझे एक महीने की बेगार देकर उन्होंने निकाल दिया, माई–बाप, आप तो अखबार छापे हो। यह कौन सा इंसाफ हुआ–?'
अजय ने उसको ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछा,
'तुम किस सेठ जी की बात करते हो?'

'वाह अजय बाबू आप भी कमाल करते हो। मुझे नहीं पहचाना, मैं हूं रामजस, वो सेठ रेखा के पिता, उनकी बात करता हूं। भैया इन हाथों ने तो आप को खाना खिलाया है–'
'परंतु उन्होंने तुम्हें नौकरी से अलग करते हुए कुछ कहा तो होगा?'
'नहीं भैया, का कहना। सुसरा उनका मैनेजर कोई अपना आदमी रखने को बोले–'

'उनकी मर्जी ठहरी। हम गरीबन की कौन सुने। कहते थे तुमने जो बर्तन तोड़े उनके पैसे तुम्हारी तनख्वाह से पूरे हो गए हैं–''

गरीबों के निर्धनता केवल आश्रय ही नहीं बल्कि एक विवशता भी है जो मानव को हैवान बना देती है। इसी कारण वह नैतिक, सामाजिक आदि मूल्यों को ताक पर रख अपना तथा अपने परिवार की भूख मिटाने के लिए धन कमाना चाहता है। यह कमाई पाप की कमाई कहलाती है। अतः निर्धनता उस दुःस्वप्न की तरह जो हमें दिन–रात चैन नहीं लेने देता। वह निर्धनता की बीमारी दूर करने के लिए या तो आत्महत्या कर लेता है या आर्थिक मूल्यों को ताक पर रखकर बुरे कार्य करने लग जाता है। आज मेहनत के बल पर ही इस बुराई को दूर किया जा सकता है। निर्धनता को दूर करने के लिए सरकार को रोजगार के अधिक से अधिक अवसर देने चाहिए व धनी वर्ग को भी चाहिए कि वह गरीब व असहाय परिवारों की आर्थिक मदद करे ताकि इस निर्धनता नामक बीमारी को दूर हो सके।

निष्कर्ष:

कहा जा सकता है कि लेखक ज्ञानसिंह मान ने ऋणग्रस्त मनुष्य को अंदर ही अंदर घुटकर मरने की स्थिति का वर्णन किया है। सरकार कड़े नियम बनाकर साहूकारों व सूदखोरों पर रोक लगानी चाहिए व असानी से ऋण उपलब्ध करवाया जाना चाहिए ताकि किसी को आत्महत्या करने के लिए मजबूर न होना पड़े।